राजयोग सिखलाता है अखिल ब्रह्माण्ड का सफर : राजयोगिनी डॉक्टर निर्मला दीदी

ज्ञान सरोवर (आबू पर्वत),११ अगस्त २०१७ । आज ज्ञान सरोवर स्थित हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ की भगिनी संस्था **,"नौपरिवहन ,विमानन और पर्यटन सेवा प्रभाग "** के संयुक्त तत्वावधान में एक **अखिल भारतीय सम्मेलन** का आयोजन हुआ। सम्मलेन का मुख्य विषय था -" यात्रा और पर्यटन के लिए नया चिंतन " . इस सम्मलेन में बड़ी संख्या में प्रतिनिधिओं ने भाग लिया . दीप प्रज्वलित करके इस सम्मेलन का उद्घाटन सम्पन्न हुआ.

राजयोगिनी डॉक्टर निर्मला दीदी जी , निदेशक , ज्ञान सरोवर तथा नौपरिवहन ,विमानन और पर्यटन सेवा प्रभाग की अध्यक्षा ने अध्यक्षीय उद्बोधन प्रकट किया। आपने कहा की हम सभी यात्री हैं और जीवन के सफर में आगे बढ़ रहे हैं। स्थूल साधनो के द्वारा हम एक देश से अन्य तक जाते हैं मगर यहां हम एक स्थान पर बैठे बैठे ही अखिल ब्रह्माण्ड का सफर करते ही रहते हैं। आप सभी यहां यह सीखेंगे।
परमधाम की यात्रा सर्वाधिक इम्पोर्टेन्ट हैं। ईश्वर तक अपनी बातें पहुंचने के लिए इस कला को सीखना ही होगा। यहां सिर्फ बाहर की सफाई नहीं बल्कि अंतर की सफाई कैसे हो - यह भी सिखाया जाता है।
जिसने यह जान लिया वह वैश्विक यात्री - आध्यात्मिक यात्री बन गया। फिर उसे पीछे मुड़ कर देखने की जरूरत नहीं हैं। हमें पूरा विश्वास है की आने वाले समय में भारत संसार में नंबर वन पर्यटन स्थल बनेगा।

नौपरिवहन ,विमानन और पर्यटन सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय समन्वयक राजयोगिनी मीरा बहन ने आज के अवसर पर कहा कि हर मानव एक यात्री है - जन्म से ही वह यात्री है। आज सर्वांगीण , टिकाऊ और सतत पर्यटन की जरूरत है क्योंकि इसका प्रभाव हमारे राष्ट्रीय विकास पर पड़ता है। धार्मिक स्थानों की यात्रा से मन को शांति प्राप्त होती है। इन धार्मिक स्थलों से हमें प्रेरणा मिलती है की हम अपने रूपांतरण के लिए इन धार्मिक जगहों का दौरा कर सकते हैं। पर्यटन के माध्यम से मूल्यों को समाज में प्रतिस्थापित करने में भी काफी मदद मिलती है। इस प्रभाग से जुड़े हुए लोग अगर अपना सहयोग देते रहे तो काफी सफलता मिल सकती है। नजरिया बदलने से नज़ारे बदल जाते हैं। संसार बदल जाता है। मीलों लम्बे सफर को हम मुस्कुरा का आसान बना सकते हैं। जीवन के किताब के अनेक पन्ने खोलने के लिए भ्रमण करना जरूरी है।

मध्य प्रदेश राज्य पर्यटन विकास निगम के सदस्य हीरेन्द्र सिंह शेखावत ने मुख्य अतिथि के बतौर अपने उदगार प्रकट किये। आपने कहा कि पर्यटन हमारी संस्कृति का एक अटूट हिस्सा रहा है। हमारे स्वभाव में भी पर्यटन शामिल है। पहले आध्यात्मिक पर्यटन था

मगर आज अनेक प्रकार के पर्यटन अस्तित्व में आ गए हैं। मेडिकल ,हेरिटेज ,विलेज ,एजुकेशनल और भी अन्य प्रकार हैं पर्यटन के।

केरल की आमदनी का एक मात्र मुख्य जरिया पर्यटन ही है। इसके माध्यम से हम खासी आमदनी भी कर सकते सकते हैं। हम सभी आज ब्रह्मा कुमारीस में पहुंचे हैं। यहां स्वच्छता का साम्राज्य पसरा हुआ है। क्या पता हमारे माननीय प्रधान मंत्री जी ने स्वछता की प्रेरणा यहीं से प्राप्त की हो ? दुःख की बात है की पर्यटन का उचित बढ़ावा यहां अभी तक नहीं मिला है। इस दिशा में ध्यान दिया जाना चाहिए।

मुंबई पोर्ट ट्रस्ट के प्रतिनिधि आर पी मुदलियार ने अपनी शुभ कामनाएं सम्मेलन को प्रदान कीं। आपने कहा की मेरा ये सौभाग्य है की मैं आज इस मंच पर उपस्थित हूँ। मैं बाल्य काल से ही ब्रह्मा कुमारीस को जानता हूँ मगर मेरा इनसे कोई सम्पर्क कभी रहा नहीं। मुझे ख़ुशी है की मैं आज यहां उपस्थित हूँ। मेरे चेयरमैन भाटिया साब रजयोगा का अभ्यास करते हैं और हमारे पोर्ट में सामूहिक योग अभ्यास होता है। मुझे भी लाभ मिला है। काफी अच्छा लगा। यह स्वर्ग है। इतना पवित्र और शांत स्थल मैंने कहीं भी नहीं देखा है। यहां के सभी भाई और बहने निःस्वार्थ सेवा में रत हैं। मैं सभी के लिए अपना हार्दिक आभार व्यक्त कर रहा हूँ।

पर्यटन उद्योगपति ललित मोहन जी ने कहा की हम इस तीर्थ स्थल पर आने वाले सौभाग्यशाली हैं। महान पल हैं ये। मुझे लग रहा है की पर्यटन को सही अर्थों में तो ये ब्रह्मा कुमारीस के भाई और बहने जी रहे हैं। आध्यात्मि यात्रा का क्या मुक़ाबला है ??

नौपरिवहन ,विमानन और पर्यटन सेवा प्रभाग की संयोजिका **राजयोगिनी कमलेश बहन** ने मंच सञ्चालन किया। **ब्रह्मा कुमारी ज्योति बहन** ने पधारे हुए अतिथियों का आभार प्रकट किया। (**रपट :बी के गिरीश** , मीडिया ,ज्ञान सरोवर)